पर्यावरण एवं सामाजिक–आर्थिक विकास का नियोजन

विकास कुमार मिश्रा

सामाजिक–आर्थिक विकास के प्रत्येक क्षेत्र में मानव के क्रियाकलापों द्वारा पर्यावरण में जो परिवर्तन हुए हैं उससे हमारे स्वास्थ्य भी प्रभावित हुए हैं। यह मान्यता सही नहीं है कि आर्थिक संवृद्धि मानव प्रगति का अकेला सूचक है। वर्तमान समय समाज के लोग नगरीकरण और औद्योगिकरण एवं ग्रामीण जीवन स्तर उच्च हो जिसमें समृद्धि लाने की आशा करते हैं, लेकिन नुकसानदेह तथ्य यह है कि इसमें भीड़–भाड़ और गन्दे जल, वायु प्रदूषण इत्यादि से अनेक सम्बन्धित रोग पैदा हो रहे हैं जिसमें अनेक संक्रामक रोग जैसे जलजन्य रोगों, दस्त, क्षयरोगों जैसे वायु जन्य रोगों में वृद्धि हो रही है। नगरीय क्षेत्रों में भारी यातायात के प्रवाह से अनेक बीमारियां जैसे सांस के रोगों में वृद्धि हो रही है। हरित क्रान्ति के दौरान खाद्य उत्पादन बढ़ाने वाले कीटनाशकों ने खेतिहर मजदूरों (कृषकों) को ओर अधिक पैदावार का उपयोग कर रहे समाज को प्रभावित किया है। विशेषकर एंटीबायोटिक दवाओं के कारण संक्रामक रोगों का इलाज भी सम्भव है। पर्यावरणीय स्वास्थ्य में जीवन की गुणवत्ता समेत मानव स्वास्थ्य के वे पक्ष शामिल हैं जो पर्यावरण में भौतिक, रासायनिक, जैविक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों से निर्धारित होता है। जलवायु में होने वाले विश्वव्यापी परिवर्तन का स्वास्थ्य पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है।